इकाई 5 तुलनात्मक लोक प्रशासन

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 किसकी तुलना करें

5.3 विश्लेषण के स्तर

5.4 तुलनात्मक अध्ययनों का क्षेत्र

5.4.1 अन्तर-संस्थागत विश्लेषण (Inter-Institutional Analysis)

5.4.2 अन्तर-राष्ट्रीय विश्लेषण (Inter-national Analysis)

5.4.3 बहुराष्ट्रीय विश्लेषण (Gross-national Analysis)

5.4.4 बहु-सांस्कृतिक विश्लेषण (Gross-cultural Analysis)

5.4.5 विभिन्न कालात्मक विश्लेषण (Gross-temporal Analysis)

5.5 तुलानात्मक का प्रशासनिक अध्ययनों की प्रकृति

5.5.1 आदर्शात्मक से अनुभवात्मक

5.5.2 भाव चित्रात्मक से विधि संबंधी

5.5.3 गैर-पारिस्थितिक से पारिस्थितिक

5.6 तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्षेत्र

5.7 तुलनात्मक लोक प्रशासन का महत्व

5.8 तुलनात्मक लोक प्रशासन में संकल्पनात्मक उपागम

5.8.1 नौकरशाही या अधिकारीतंत्रात्मक उपागम

5.8.2 व्यवहारवादी उपागम

5.8.3 सामान्य निकाय उपागम

5.8.4 पारिस्थितिक उपागम

5.8.5 संरचनात्मक-कार्यात्मक उपागम

5.8.6 विकासवादी उपागम

5.9 सारांश

5.10 शब्दावली

5.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- तुलनात्मक लोक प्रशासन के महत्व को समझा सकेंगे।
- तुलनात्मक अध्ययन की प्रकृति और उसके क्षेत्र को बता सकेंगे, और
- तुलनात्मक लोक प्रशासन में संकल्पनात्मक दृष्टिकोणों को बता सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

प्रशासनिक प्रणालियों की तुलना की एक लंबी परंपरा रही है । परन्तु प्रशासनिक अध्ययन के इस पहलू पर ध्यान लगभग 48 वर्ष से ही गया हैं । द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात एवं एशिया व अफ्रीका में नये राष्ट्र के उदय के साथ ही लोक प्रशासन के तुलनात्मक अध्ययन में अत्यधिक रुचि विकसित हुई । साधारण अर्थों में तुलनात्मक लोक प्रशासन का अर्थ विश्व के विभिन्न देशों में कार्यरत सरकारी प्रशासनिक प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन है। तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति अनेक शाखाओं और श्रेणियों में विभाजित है जो संकीर्ण अध्ययन से लेकर अधिक विस्तृत विश्लेषणों तक फैला हुआ है। तुलनात्मक लोक प्रशासन को समझने के लिए इस विषय में विद्वानों द्वारा किए गए तुलनात्मक लोक प्रशासनिक चयनों के रूपों पर दृष्टिपात करना वांछनीय होगा । इस इकाई में हम तुलनात्मक लोक प्रशासन के अर्थ, क्षेत्र व प्रकृति का परीक्षण करेंगे। हम इसके संकल्पनात्मक उपागमों पर भी विचार करेंगे।

5.2 किसकी तुलना करें

तुलनात्मक (लोक) प्रशासनिक अध्ययनों में विश्लेषण की इकाई एक प्रशासनिक प्रणाली होती है। इसलिए ध्यान या तो सम्पूर्ण प्रशासनिक प्रणाली पर या उसके विभिन्न भागों पर केन्द्रित होता है। संक्षेप में, तुलना की विषय वस्तु निम्नलिखित में से कोई भी एक या सभी होंगे।

1) प्रशासनिक प्रणाली का परिवेश
2) सम्पूर्ण प्रशासनिक प्रणाली
3) पदसोपान, कार्य विभाजन, विशेषज्ञता, सत्ता उत्तरदायित्व का ताना-बाना, विकेन्द्रीकरण, प्रत्यायोजन, नियंत्रण व्यवस्था व कार्य प्रणाली को केन्द्र बिन्दु बनाकर प्रशासनिक प्रणाली की औपचारिक संरचना।
4) एक प्रशासनिक ढाँचे में अनौपचारिक संगठन का स्वरूप जिसमें मानव वर्गों की प्रकृति, व्यक्तियों के बीच परस्पर संबंध, अभिप्रेरणा प्रणाली, मनोबल का स्तर,अनौपचारिक संचार का स्वरूप व नेतृत्व की प्रकृति, शामिल होती है
5) व्यक्तियों की भूमिकाएँ
6) संगठनात्मक प्रणाली और व्यक्तियों के व्यक्तित्व के बीच अन्तः क्रिया
7) संगठन की वे नीति व निर्णयात्मक प्रणालियाँ जिनके माध्यम से उसके विभिन्न भाग आपस में जुड़ते हैं (या जो उसके विभिन्न भागों को जोड़ती है) ।
8) संचार-प्रणाली जिसमें पुनर्निवेश या प्रतिपुष्टि की क्रियाविधि भी शामिल है।
9) प्रशासनिक प्रणाली का कार्य निष्पादन

ऊपर की बातों में आपने यह देखा है कि प्रशासनिक प्रणाली एक सरल तत्व नहीं है। इसकी कार्य प्रणाली की जटिलताओं को किसी भी तुलनात्मक विश्लेषण में उभारा जायेगा।

5.3 विश्लेषण के स्तर

तुलनात्मक प्रशासनिक अध्ययन तीन विश्लेषात्मक स्तरों—बृहत्, मध्यम क्षेत्र एवं सूक्ष्म पर किए जा सकते हैं। बृहत् अध्ययनों का केन्द्र बिन्दु संम्पूर्ण प्रशासनिक प्रणालियों का उनके सही पारिस्थितिक संदर्भ में तुलना करना है। उदाहरण के लिए, भारत व ग्रेट ब्रिटेन की प्राशासनिक प्रणालियों की तुलना बृहत अध्ययन होगा जिसमें दोनों देशों की प्रशासनिक प्रणालियों के सभी महत्वपूर्ण भागों व पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण सम्मिलित होगा इसका क्षेत्र व्यापक होगा। यद्यपि बृहत् अध्ययन बहुत ही कम होते हैं, परन्तु ऐसा करना असंभव नही है। सामान्यतः बृहत् स्तर पर किए जाने वाले अध्ययनों और उसके बाह्य परिवेश के बीच सम्बन्धों को उभारा जाता है। मध्यम स्तर अध्ययन प्रशासनिक प्रणाली के कुछ महत्वपूर्ण भागों पर किये जाते हैं जिनका आकार पर्याप्त विस्तृत और कार्य प्रणाली व्यापक होती है। उदाहरण के लिए, दो या अधिक देशों की उच्च नौकरशाही की संरचना की तुलना या दो या अधिक राष्ट्रों के कृषि प्रशासन की तुलना या विभिन्न देशों में स्वायत्त शासन की तुलना मध्यम स्तर के अध्ययन के उदाहरण हैं।

सूक्ष्म अध्ययन किसी एक संगठन का दूसरे संगठन में उसके प्रति रूप की तुलना से संबंधित है। सूक्ष्म अध्ययन प्रशासनिक प्रणाली के किसी छोटे भाग का विश्लेषण हो सकता है जैसे दो या अधिक प्रशासनिक संगठनों में भर्ती या प्रशिक्षण की प्रणाली का अध्ययन सूक्ष्म व्यावहारिक होते हैं। तथा इस प्रकार के बहुत से अध्ययन लोक प्रशासन के विद्वानों ने किए हैं। आज के तुलनात्मक लोक प्रशासन में तीनों प्रकार के अध्ययन किए जाते हैं।

दूसरा प्रासंगिक प्रश्न यह है कि तुलनात्मक प्रशासनिक अध्ययनों की सीमा या क्षेत्र क्या है? इस क्षेत्र में सामान्यतः किस प्रकार के अध्ययन आते हैं? वास्तव में तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि ज्ञान की इस शाखा में विविध प्रकार के विश्लेषण शामिल किये जाते हैं।

5.4 तुलनात्मक अध्ययनों का क्षेत्र

अब हम संक्षेप में तुलनात्मक प्रशासनिक अध्ययनों के रूपों का निरूपण करेंगे। मुख्य रूप से 5 प्रकार के अध्ययन हैं।

5.4.1 अन्तर-संस्थागत विश्लेषण (Inter-institutional Analysis)

इसमें दो या अधिक प्रशासनिक प्रणालियों का विश्लेषण शामिल होता है। उदाहरणार्थ, भारत सरकार के गृह मंत्रालय की संरचना व कार्य-विधि (working) की तुलना रक्षा मंत्रालय के साथ करना अन्तर-संस्थागत विश्लेषण होगा। इस प्रकार की तुलनाएँ किसी प्रशासनिक संगठन के संपूर्ण रूप या उसके विभिन्न भागों को लेकर की जा सकती है।

5.4.2 अन्तरा-राष्ट्रीय विश्लेषण (Inter-national Analysis)

जब किसी देश में कार्यरत विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों का विश्लेषण तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में किया जाता है तो वह अन्तरा-राष्ट्रीय विश्लेषण कहा जाता है। उदाहरण के लिए बिहार के जिला प्रशासन की तुलना पंजाब के जिला प्रशासन से करना अन्तरा-राष्ट्रीय विश्लेषण होगा।

5.4.3 बहु-राष्ट्रीय विश्लेषण (Gross-national Analysis)

जब दो या अधिक प्रशासनिक प्रणालियों (या उनके भागों की तुलना विभिन्न राष्ट्रों की स्थितियों में की जाती है तो वह बहु-राष्ट्रीय विश्लेषण कहा जाता है उदाहरण के लिए चीन, थाइलैंड और तंजानिया की उच्च सिविल सेवाओं में भर्ती की तुलना करना बहु-राष्ट्रीय विश्लेषण कहलायेगा।

5.4.4 बहु-सांस्कृतिक (Gross Cultural) विश्लेषण

प्रशासनिक प्रणालियों के बहु-राष्ट्रीय विश्लेषण में जब भिन्न-भिन्न संस्कृतियों वाले देश सम्मिलित हों तो वह बहु-सांस्कृतिक विश्लेषण कहलायेगा। जैसे सोवियत रूस (एक समाजवादी देश) और अमरीका (एक पूंजीवादी व्यवस्था) की प्रशासनिक प्रणाली की तुलना करना बहु-सांस्कृतिक विश्लेषण कहलायेगा। तथा एक विकसित देश (जैसे फ्रांस) की एक विकासशील (जैसे एल्जीरिया) के साथ या एक विकासशील प्रजातांत्रिक देश (उदाहरण के लिए फिलीपीन्स) व विकासशील साम्यवादी शासन (जैसे वियतनाम) की तुलना भी बहु-सांस्कृतिक तुलना में सम्मिलित हैं। इस प्रकार "बहु-सांस्कृतिक श्रेणी में सांस्कृतिक शब्द का व्यापक अर्थ है और एक निश्चित प्रणाली व उसके वातावरण की विशिष्ट राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं का सामूहिक रूप है।

5.4.5 विभिन्न कालात्मक विश्लेषण (Gross-temporal Analysis)

इस प्रकार की तुलना में विभिन्न कालों की प्रशासन प्रणालियाँ विश्लेषण के लिए शामिल की जाती हैं। उदाहरणस्वरूप अशोक के शासन काल की प्रशासनिक प्रणाली व अकबर के शासन की प्रशासनिक प्रणाली की तुलना विभिन्न कालात्मक विश्लेषण है। इसी प्रकार प्राचीन रोम व आधुनिक इटली की प्रशासनिक प्रणालियों की तुलना या जवाहरलाल नेहरू और इन्दिरा गांधी के समय में प्रचलित प्रशासनिक पद्धतियों की तुलना विभिन्न कालात्मक विश्लेषण के शीर्षक में आता है।

विभिन्न कालात्मक विश्लेषण अन्तर्संस्थागत, अन्तरा-राष्ट्रीय, बहु-राष्ट्रीय या बहु-सांस्कृतिक हो सकता है। उदाहरणार्थ जूलियस सीजर, एलेक्जेंडर, हर्ष, अतातुर्क और नासर के समय में प्रचलित प्रशासनिक नियंत्रण व्यवस्थाओं की तुलना बहु-राष्ट्रीय भी है और बहु-सांस्कृतिक भी। विभिन्न कालात्मक अध्ययनों में निश्चितता या सुस्पष्टता (Exactness) संभव नहीं हैं क्योंकि विभिन्न अवधियों या युगों के प्राप्त ऐतिहासिक स्रोतों की प्रकृति में भिन्नताएं होती हैं। परन्तु इस प्रकार के अध्ययनों के द्वारा कुछ सामान्य निष्कर्ष वर्तमान स्रोतों के आधार पर निकाले जा सकते हैं। एन. रफायली ने तुलनात्मक आधार पर लोक प्रशासन को अध्ययन के रूप में तुलनात्मक लोक प्रशासन की परिभाषा दी है। तुलनात्मक प्रशासन ग्रुप में तुलनात्मक लोक प्रशासन के उस सिद्धांत के रूप में उल्लेख किया गया है जो राष्ट्रीय व्यवस्थाओं में विविध प्रकार की संस्कृतियों से सम्बद्ध हैं और वास्तविक (factual) आँकड़ों द्वारा उनका विस्तार और परीक्षण किया जा सकता है। राबर्ट जेक्सन ने इसकी परिभाषा अध्ययन के उस चरण के रूप में की है जिसका संबंध सार्वजनिक कार्यों

की प्रशासनिक क्रिया में सम्मिलित संरचनाओं व प्रक्रियाओं की बहु-सांस्कृतिक तुलनाओं से है।

☛ बोध प्रश्न - 1

टिप्पणी i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) तुलनात्मक लोक प्रशासन में विश्लेषण की इकाइयाँ कौन सी हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) बहु-सांस्कृतिक विश्लेषण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) विभिन्न कालात्मक विश्लेषण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 तुलनात्मक प्रशासनिक अध्ययनों की प्रकृति

कुछ विद्वानों का विश्वास है कि तुलना किसी भी सामाजिक विश्लेषण का अन्तर्निहित भाग है और जब हम किसी सामाजिक समस्या या प्रश्न की परीक्षा करते हैं तो हम तुलनात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग किए बगैर ऐसा नहीं कर सकते। प्रसिद्ध समाजविज्ञानी डर्कहाइम ने इस दृष्टिकोण का समर्थन किया है।

इसके अतिरिक्त इसेन्सटाड का विश्वास है कि सामान्यतः सामाजिक शोध व तुलनात्मक शोध में कोई भेद नहीं है क्योंकि दोनों की पद्धतियाँ (methods) एक जैसी हैं। दूसरी ओर कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि तुलनात्मक शोध का विशेष केंद्र बिन्दु एक तकनीक है। द्वितीय विश्व युद्ध से पहले तुलनात्मक राजनीति और प्रशासन पर अनेक अध्ययन किए गए थे लेकिन वे अध्ययन मुख्य रूप से वर्णात्मक और आदर्शवादी थे। फ्रेड रिग्स, जो तुलनात्मक प्रशासन का अग्रणी या सर्वोपरि (foremost) विद्वान है, ने टिप्पणी करते हुए कहा था कि लोक प्रशासन के तुलनात्मक अध्ययन में तीन प्रवृत्तियां देखी जा सकती थीः (1) आदर्शात्मक से अनुभवात्मक (2) भाव चित्रात्मक से विधि सम्बन्धी तथा (3) गैर पारिस्थितिक से पारिस्थितिक। अब हम इन प्रवृत्तियों का संक्षेप में वर्णन करेंगे।

5.5.1 आदर्शात्मक से अनुभवात्मक (Normative to Empirical)

लोक प्रशासन के परम्परागत अध्ययनों पर प्राचीन उपागम का अत्यधिक प्रभाव था। इन अध्ययनों में उत्तम प्रशासन पर बल दिया गया था जो कुछ आदर्श सिद्धांतों पर आधारित था। कार्य कुशलता एवं अर्थव्यवस्था को सभी प्रशासनिक प्रणालियों का प्राथमिक उद्देश्य माना गया था और औपचारिक संगठन के कुछ निश्चित सिद्धांत होते थे जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक थे। इसलिए मुख्यतः पश्चिमी प्रजातंत्रिक विश्व के कुछ प्रशासनिक आदर्शों को, अन्य सभी प्रशासनिक प्रणालियों के लिए उपयोगी समझा गया। अनेक विकासशील देशों का उदय तथा विश्व के विभिन्न भागों में साम्यवादी प्रणालियों की सफलता के साथ ही यह स्पष्ट हो गया कि लोक प्रशासन के अध्ययन के लिए सीमित संस्कृतिबद्ध आदर्श उपागम पर्याप्त नहीं है। व्यवहारवादी उपागम ने तथ्यों तथा वास्तविकता के अध्ययन के महत्व को विशेष रूप से उजागर किया तथा इसलिए द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् लोक प्रशासन के तुलनात्मक अध्ययनों में विभिन्न देशों व संस्कृतियों में विद्यमान प्रशासनिक वास्तविकता के अध्ययन को और अधिक महत्व दिया जाने लगा। इन अध्ययनों की रुचि प्रशासनिक प्रणालियों के संरचनात्मक स्वरूप तथा व्यवहार सम्बन्धी तथ्यों का पता लगाने में अधिक थी अपेक्षाकृत प्रत्येक प्रणाली के लिए यह बताने में कि उनके लिए उत्तम क्या है?

इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि पिछले लगभग दो दशकों में कुछ प्रशासनिक अध्ययनों की प्रकृति को दो महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों ने प्रभावित किया है। प्रथम, विकास प्रशासन की अवधारणा, जिसका केंद्र प्रशासनिक प्रणाली का ध्येयोन्मुख होना है, मुख्य रूप से आदर्शात्मक अवधारणा है। यद्यपि यह वास्तविकता को ध्येयोन्मुखता का आधार मानती है, 1960 के दशक के पूर्वार्द्ध से शोध के केंद्र बिन्दु के रूप में विकास प्रशासन का उदय होने के साथ ही तुलनात्मक लोक प्रशासन (तुलनात्मक विकास प्रशासन के क्षेत्र सहित) ने विश्लेषण के आदर्शात्मक व अनुभवात्मक तत्वों के बीच संश्लेषण (synthesis) को विकसित किया है।

दूसरा आंदोलन, जिसने तुलनात्मक प्रशासनिक अध्ययनों की प्रकृति को प्रभावित किया है, वह है "नवीन लोक प्रशासन" जिसने एक प्रशासनिक प्रणाली द्वारा आदर्शात्मक उद्देश्य (idealistic goal) की प्राप्ति पर बल दिया और इस प्रकार लोक प्रशासन के "है" और "चाहिए" पहलुओं के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में, नवीन लोक प्रशासन ने "उत्तर व्यवहारवादी" (post-behavioural) प्रवृत्ति को अपनाया और बहुत से प्रशासनिक विश्लेषणों पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है।

5.5.2 भाव-चित्रात्मक से विधि सम्बंधी (Ideographic to Nomothetic)

रिग्स ने भाव चित्रात्मक व विधि सम्बन्धी शब्दों का प्रयोग विशेष संदर्भ में किया है। भाव-चित्रात्मक उपागम में किसी अन्य विषय, जैसे किसी ऐतिहासिक घटना या किसी ऐजेंसी का अध्ययन, किसी देश या किसी सांस्कृतिक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

दूसरी ओर विधि सम्बन्धी उपागम में साधारणीकरण तथा सिद्धांत को विकसित करने का प्रयत्न किया गया है जो प्रशासनिक प्रणालियों के व्यवहार की नियमितताओं के विश्लेषण पर आधारित हों। इस प्रकार तुलनात्मक लोक प्रशासन के पहले के अध्ययन जिनकी प्रकृति भाव-चित्रात्मक थी, में अलग-अलग राष्ट्रों या संस्थाओं के अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित किया गया था और उनका दृष्टिकोण मुख्य रूप से वर्णनात्मक था। विभिन्न राष्ट्रों और प्रणालियों की तुलना करने का कोई गम्भीर प्रयास नहीं किया गया था। सामान्यतः तुलनात्मक सरकारी प्रशासन के ग्रंथ में भिन्न-भिन्न राष्ट्रों पर अलग-अलग अध्याय लिखे गये थे जिनमें ऐसे राष्ट्रों की प्रशासनिक प्रणालियों के संदर्भ में समानताओं या विभिन्नताओं पर दृष्टि डालने का कोई प्रयास नही किया गया था। इस प्रकार ये अध्ययन केवल नाम मात्र को ही तुलनात्मक थे और सिद्धांत निर्माण की प्रक्रिया में या भिन्न व्यवस्थाओं (setting) में प्रशासनिक प्रणालियों के कार्य-संपादन (functioning) के सम्बन्ध में साधारणीकरण को विकसित करने में सहायक नहीं थे।

विधि सम्बन्धी अध्ययन में विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों के तुलनात्मक अध्ययन का इस प्रकार विश्लेषण किया गया है जिससे परिकल्पना तथा सिद्धांत के निर्माण करने में सहायता मिले। इस प्रकार के अध्ययनों का उद्देश्य भिन्न-भिन्न राष्ट्रों व संस्कृतियों में विद्यमान विविध प्रशासनिक प्रणालियों के बीच समानताओं व असमानताओं पर दृष्टिपात करना और विविध स्तरों पर और भिन्न-भिन्न व्यवस्थाओं में कार्यरत प्रशासनिक प्रणालियों के बारे में कुछ सामान्यीकरण स्थापित करना है।

यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि विधि सम्बन्धी अध्ययनों पर यूरोप या एशिया की अपेक्षा संयुक्त राज्य अमरीका में अधिक बल दिया जाता है। आजकल तुलनात्मक प्रशासनिक अध्ययनों का अधिकांश भाग भाव-चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। ये अध्ययन भी यह स्वीकार करना आवश्यक है, तुलनात्मक लोक प्रशासन के ज्ञान में योगदान करते हैं। विश्लेषण या सिद्धांत निर्माण के लिए भी तथ्यों तथा विवरण को आधारभूत बनाना होता है और इसलिए तुलनात्मक प्रशासनिक अध्ययनों की वर्तमान अवस्था में भाव-चित्रात्मक व विधि सम्बन्धी अध्ययनों के सहअस्तित्व को स्वीकार करना होगा।

5.5.3 गैर-पारिस्थितिक से पारिस्थितिक (Non-ecological to Ecological)

तुलनात्मक लोक प्रशासन के परम्परावादी अध्ययन मुख्यतः गैर-पारिस्थितिक थे। इन अध्ययनों में प्रशासनिक प्रणाली के पर्यावरण का उल्लेख केवल आकस्मिक रूप से ही किया गया है। प्रशासनिक प्रणाली और दूसरे पर्यावरण के बीच सम्बन्धों की जांच करने का कोई गंभीर प्रयास नही किया गया। इस प्रकार विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों के बीच भिन्नताओं के स्रोतों को जानना कठिन हो गया था। फिर भी, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद किए गए अध्ययन निश्चित रूप से विभिन्न देशों व संस्कृतियों में प्रचलित पर्यावरण व्यवस्था के बीच समानताओं व असमानताओं पर दृष्टिपात करते रहे और एक तरफ पर्यावरण का प्रशासनिक प्रणाली पर प्रभाव तथा दूसरी ओर प्रशासनिक प्रणाली पर पर्यावरण के प्रभाव का परीक्षण करने का प्रयास करते रहे हैं। सुप्रसिद्ध परिवेशीय उपागम की सम्बन्ध प्रणाली और उसके पर्यावरण के बीच परस्पर सम्बन्ध के अध्ययन से है। फ्रेड रिग्स के द्वारा प्रचारित किया गया यह उपागम लोक प्रशासन के अध्ययन में महत्वपूर्ण विकास माना जाता है।

यहाँ यह देखा जा सकता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात के लोक प्रशासन के अधिकतर तुलनात्मक अध्ययनों में प्रशासनिक प्रणालियों के पर्यावरण की चर्चा होती रही है, परन्तु अब भी लोक प्रशासन पर पर्यावरण के प्रभाव का विश्लेषण करने पर विशेष बल दिया जाता है। प्रशासनिक प्रणाली के पर्यावरण पर प्रभाव का विश्लेषण अभी भी अपर्याप्त है। फिर भी, महत्व या बल में परिवर्तन देखने योग्य है और समकालीन तुलनात्मक प्रशासनिक विश्लेषण में परिवेशीय उन्मुखता की जड़ें अधिक मजबूत होती जा रही हैं।

यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि जब 1962 में रिग्स ने ये तीन प्रवृत्तियाँ प्रस्तुत की थीं, तो वह इस तथ्य के प्रति सचेत था कि तुलनात्मक अध्ययनों में नये व पुराने का सह-अस्तित्व अवश्यम्भावी है। तदनुरूप आज तुलनात्मक प्रशासन के साहित्य में आदर्शात्मक और अनुभवात्मक, भाव-चित्रात्मक व विधि सम्बन्धी तथा गैर-पारिस्थितिक व पारिस्थितिक उपागम साथ-साथ अस्तित्व में हैं।

☛ **बोध प्रश्न - 2**

टिप्पणी i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) आदर्शात्मक तथा अनुभवात्मक अध्ययनों में भेद कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) पारिस्थितिक अध्ययन गैर-पारिस्थितिक अध्ययनों से किस प्रकार भिन्न हैं।

.....

.....

.....

.....

5.6 तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्षेत्र

20वीं सदी में लोक प्रशासन का क्षेत्र अत्यधिक बढ़ गया है। लोक प्रशासन का महत्व, रूसी क्रांति की सफलता, द्वितीय विश्व युद्ध के समय तथा उसके पश्चात राज्य की बढ़ी हुई भूमिका, अधिकांश देशों में प्रारंभ किए गए कल्याणकारी कार्यक्रम या उपाय (measures) तथा बड़ी संख्या में विकासशील देशों के उदय होने के कारण काफी बढ़ गया है। आज लोक प्रशासन मानव जीवन के लगभग सभी पक्षों को प्रभावित करता है। अमरीका जैसे पूंजीवादी देश में भी सरकार की भूमिका का कारगर रूप में विस्तार हुआ है। कुल मिलाकर राज्य या सरकार की इस बढ़ी भूमिका का परिणाम यह हुआ है कि बड़ी संख्या में लोक प्रशासन की विशेषीकृत शाखाओं का विकास हुआ है। इनमें से कुछ शाखायें हैं — आर्थिक प्रशासन, सामाजिक प्रशासन, शैक्षिक प्रशासन, स्वास्थ्य प्रशासन, परिवहन प्रशासन, अंतरिक्ष प्रशासन इत्यादि। इसके अतिरिक्त राज्य प्रशासन, शहरी प्रशासन, ग्रामीण प्रशासन, वित्त प्रशासन व कार्मिक प्रशासन ऐसे क्षेत्र है जो सरकार के शब्दकोश के अभिन्न अंग बन गए हैं। इसलिए, जब हम विभिन्न राष्ट्रों या संस्कृतियों में

विद्यमान प्रशासनिक प्रणालियों की तुलना करते हैं, तब हम या तो संपूर्ण प्रशासनिक प्रणालियों या इन प्रणालियों के महत्वपूर्ण भागों की तुलना कर सकते हैं। आज, हम तुलनात्मक शैक्षिक प्रशासन, तुलनात्मक स्वास्थ्य प्रशासन, तुलनात्मक आर्थिक प्रशासन, तुलनात्मक सामाजिक प्रशासन तथा अन्य संबंधित क्षेत्रों के बारे में बहुत से अध्ययन पाते हैं। इसके अतिरिक्त तुलनात्मक शहरी प्रशासन तथा तुलनात्मक ग्रामीण प्रशासन पर अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। यह स्पष्ट है कि तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्षेत्र अपने उत्पत्ति विषय अर्थात लोक प्रशासन के समान ही विस्तृत है या जो कुछ भी प्रशासनिक है, उसकी तुलना की जा सकती है।

तुलनात्मक लोक प्रशासन के क्षेत्र की चर्चा करते समय हमें प्रशासन की केवल विशेषीकृत शाखाओं पर ही ध्यान नहीं देना है बल्कि इस बात पर पुनः बल देने की आवश्यकता है कि तुलनात्मक अध्ययन बृहत, मध्यम स्तर तथा सूक्ष्म स्तर पर किए जा सकते हैं। ये अध्ययन अन्तर्संस्थागत, बहुराष्ट्रीय, बहु-सांस्कृतिक और बहु-समयात्मक हो सकते हैं।

यहाँ एक रोचक प्रश्न उत्पन्न होता है कि तुलनात्मक प्रशासन की प्रकृति के क्षेत्र में हम क्या शामिल करेंगे तथा तुलनात्मक प्रशासन के क्षेत्र के शीर्षक के अन्तर्गत हम क्या रखेंगे? लोक प्रशासन के विद्यार्थियों को जो सर्वोत्तम सलाह दी जा सकती है वह है कि तुलनात्मक लोक प्रशासन के क्षेत्र और प्रकृति में स्पष्ट भेद करने का प्रयास बहुत अधिक उपयोगी नहीं हो सकता ये दोनों पहलू अति व्यापित (over lapping) हैं तथा तुलनात्मक अध्ययनों के प्रकार, स्तर और दोनों पर एक समान बल देते हैं। अब तुलनात्मक लोक प्रशासन के महत्व की संक्षिप्त चर्चा उचित होगी।

5.7 तुलनात्मक लोक प्रशासन का महत्व

आज तुलनात्मक लोक प्रशासन का महत्व सर्वमान्य (well accepted) है। दो तत्व हैं जो तुलनात्मक अध्ययन को महत्वपूर्ण बनाते हैं। प्रथम तत्व लोक प्रशासन का सैद्धान्तिक अध्ययन है। यह विश्वास किया जाता है कि तुलनात्मक लोक प्रशासन के माध्यम से उन प्राक्कल्नों (hypothesis), सामान्यीकरण, प्रतिमानों व सिद्धांतों का निर्माण किया जा सकता है जो सामूहिक रूप से लोक प्रशासन के वैज्ञानिक अध्ययन में सहायता कर सकते हैं। प्रशासन के रूढ़िवादी सिद्धांतों को मान्यता नहीं दी जाती और इसलिए आज यह विश्वास किया जाता है कि विभिन्न राष्ट्रों व संस्कृतियों के तुलनात्मक अध्ययनों से उभरते हुए प्रशासनिक संरचना एवं व्यवहार से संबंधित सामान्यीकरण ऐसी सैद्धांतिक संकल्पनाएं बनाने में सहायता कर सकते हैं जो लोक प्रशासन के अध्ययन को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर सकें। यह उल्लेखनीय है कि बहुत पहले 1947 में एक सुप्रसिद्ध राजनीति वैज्ञानिक डॉल राँबर्ट ने कहा था कि तुलनात्मक उपागम का प्रयोग किए बिना लोक प्रशासन के विज्ञान के विषय में सोचा भी नही जा सकता।

तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन से विभिन्न राष्ट्रों और संस्कृतियों में कार्यरत प्रशासनिक प्रणालियों की निजी विशेषताओं को अधिक समझने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त तुलनात्मक अध्ययन से प्रशासनिक प्रणालियों में अन्तर्राष्ट्रीय, तथा अन्तर्सांस्कृतिक समानताओं व भेदों को स्पष्ट करने वाले तत्वों को स्पष्ट करने में भी सहायता मिलती है।

तुलनात्मक लोक प्रशासन का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य अनुभवात्मक विश्व की प्रासंगिकता से संबंधित है। तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन के माध्यम से प्रशासन नीति, निर्माता व शिक्षाविद् किसी खास प्रशासनिक संरचनाओं और विभिन्न पर्यावरणीय स्वरूपों की सफलता या असफलता के कारणों की जाँच कर सकते हैं। तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह पता लगाना रोचक है कि पर्यावरण के कौन से महत्वपूर्ण तत्व प्रशासन को प्रभावशाली बनाने में सहायता करते है और कौन-कौन सी प्रशासनिक संरचनाएँ किस प्रकार की पर्यावरणीय व्यवस्था में ठीक तरह से और सफलतापूर्वक कार्य करती है । अंत में, प्रशासक या नीति-निर्माता, लोक प्रशासन के तुलनात्मक अध्ययनों के माध्यम से प्रशासनिक सुधारों की प्रक्रियाओं और नीतियों के बारे में गहरी जानकारी प्राप्त कर सकता है। वह विभिन्न राष्ट्रों द्वारा अपनाये गये प्रशासनिक सुधारों की संरचनाओं पर दृष्टिपात कर सकता है। तथा उसके अपने देश के हित में सहायक हो सकने वाली नीतियों और पद्धतियों का परीक्षण कर सकता है। दूसरे शब्दों में, तुलनात्मक लोक प्रशासन के माध्यम से, हम विभिन्न राष्ट्रों में प्रयोग में लाई जाने वाली प्रशासनिक प्रणालियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और फिर उन प्रणालियों को अपनाते हैं जो हमारे अपने राष्ट्रों तथा प्रणालियों के लिए उचित हैं।

तुलनात्मक लोक प्रशासन का महत्व, लोक प्रशासन के व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक अध्ययन के संदर्भ में, इसकी शैक्षणिक उपयोगिता में तथा दूसरी प्रशासनिक प्रणालियों से संबंधित ज्ञान में सुधार करने में है जिससे भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में उचित प्रशासनिक सुधार तथा परिवर्तन किये जा सकें।

बोध प्रश्न - 3

टिप्पणी i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्षेत्र क्या है?

.....

.....

.....

.....

2 प्रशासनिक सुधारों के लिए तुलनात्मक अध्ययन किस प्रकार प्रासंगिक है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.8 तुलनात्मक लोक प्रशासन में संकल्पनात्मक उपागम

आज तुलनात्मक लोक प्रशासन के विषय क्षेत्र की विशेषताओं को बताने वाले अनेक उपागम, प्रारूप व सिद्धांत हैं। विशेषतः द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् तुलनात्मक प्रशासनिक विश्लेषण के क्षेत्र में बहुत से उपागमों का उदय हुआ है। काफी सीमा तक यह प्रयास तुलनात्मक नृविज्ञान, तुलनात्मक समाजशास्त्र व तुलनात्मक राजनीति में हुए विकासों के रूपान्तरण पर आधारित है। अब हम संक्षेप में विभिन्न उपागमों का अध्ययन करेंगे।

5.8.1 नौकरशाही या अधिकारीतंत्रात्मक उपागम (Bureaucratic Approach)

उपागमों में सर्वाधिक प्रभावशाली मैक्स वेबर का आर्दश रूप अधिकारीतंत्रात्मक प्रतिमान है। पदसोपान, विशेषज्ञता, निश्चित भूमिका, योग्यता के अनुसार भर्ती, वरिष्ठता एवं योग्यता के आधार पर पदोन्नति, जीवन वृत्ति विकास, प्रशिक्षण, अनुशासन, निजी एवं सरकारी साधनों के बीच पृथक्करण इत्यादि इसकी संरचनात्मक विशेषताएं हैं। इस प्रारूप में तार्किकता व कार्यकुशलता पर बल दिया गया है।

वेबर के अधिकारीतंत्रात्मक प्रारूप में अनेक तुलनात्मक अध्ययन किए गए हैं। इस क्षेत्र के उल्लेखनीय विद्वानों में माइकल क्रोजियर (फ्रांस पर), रायलेयर्ड (सोवियत रूस पर) मोरो वर्जर (मिश्र पर) शामिल हैं। एक आदर्श प्रतिमान की पद्धति सम्बन्धी सीमाएं एवं तार्किक वैधिक शक्ति प्रणाली का निश्चित संदर्भ नौकरशाहियों के तुलनात्मक अध्ययन में वैबरीय प्रतिमान के प्रयोग पर बाधा उत्पन्न करते हैं। फिर भी विकसित देशों की नौकरशाहियों के विश्लेषण के लिए यह प्रतिमानों को आज भी व्यापक रूप से उपयोगी समझा जाता है।ड्वाइट वाल्डो वेबरीय नौकरशाही प्रतिमान को लोक प्रशासन का एक आदर्श उदाहरण मानता है।

विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात तुलनात्मक प्रशासनिक विश्लेषण के क्षेत्र में अनेक उपागमों का उदय हुआ। काफी सीमा तक यह प्रयास तुलनात्मक नृविज्ञान, तुलनात्मक समाजशास्त्र और तुलनात्मक राजनीति में हुए विकासों के रूपांतरण (adaptation) पर आधारित है।

5.8.2 व्यवहारवादी उपागम (Behavioural Approach)

व्यवहारवादी उपागम में तथ्यों, आंकड़े एकत्र करने व विश्लेषण करने की क्लिष्ट वैज्ञानिक पद्धति, परिमाणन, प्रयोग, परीक्षण, सत्यापन और आन्तरिक अनुशासन पर बल दिया गया है। यह प्रशासनिक व्यवस्थाओं में मानव व्यवहार के विश्लेषण पर ध्यान केन्द्रित करता है।

5.8,3 सामान्य निकाय उपागम (General System Approach)

इसके अतिरिक्त सामान्य निकाय उपागम में प्रशासनिक प्रणाली को समाज की उप व्यवस्था माना गया है। यह प्रशासनिक प्रणाली के विभिन्न भागों (औपचारिक संगठन, अनौपचारिक संगठन), भूमिकाएं, व्यक्तियों पर दृष्टिपात करता है और उन भागों के बीच परस्पर संबंधों का परीक्षण करता है। इसके अतिरिक्त, इस उपागम में प्रशासनिक प्रणाली और उसके बाह्य वातावरण के बीच गतिशील या व्यावहारिक पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण किया गया है।

5.8.4 पारिस्थितिक उपागम (Ecological Approach)

तुलनात्मक लोक प्रशासन के सर्वाधिक प्रसिद्ध उपागमों में से एक है पारिस्थितिक उपागम जिस पर फ्रेड रिग्स ने काफी बल दिया है। इस उपागम में प्रशासनिक प्रणाली और उसके बाह्य वातावरण के बीच परस्पर संबंधों का परीक्षण किया गया है। इस प्रकार, पारिस्थितिक उपागम में प्रशासनिक प्रणाली की संरचना एवं व्यवहार पर राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक व्यवस्था के प्रभाव और इन पारिस्थितिक संरचनाओं पर प्रशासनिक प्रणाली के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

5.8.5 संरचनात्मक-कार्यात्मक उपागम (Structural-functional Approach)

एक संबंधित उपागम, जिसे नृविज्ञान व समाजशास्त्र से लिया गया है, संरचनात्मक-कार्यात्मक उपागम है। इसके अनुसार संरचना व्यवहार का वह रूप होता है जो किसी सामाजिक व्यवस्था की मानक विशेषता बन जाता है। इसके अतिरिक्त, कोई कार्य किसी एक संरचना का दूसरी संरचना पर पड़ने वाले प्रभाव तथा विभिन्न संरचनाओं के बीच परस्पर संबंधों को दर्शाता है।

फ्रेड रिग्स ने समाजों और उनकी प्रशासनिक प्रणालियों के अपने विश्लेषण में पारिस्थितिक व संरचनात्मक-कार्यात्मक उपागमों का सफलता पूर्वक प्रयोग किया है। 1957 में कृषि पर आधारित औद्योगिक प्रणाली के प्रतीकात्मक वर्गीकरण का विकास किया गया था। उसके बाद, 1959 में उसके स्थान पर अनेक कार्य करने वाले विशिष्ट समाजों की रचना की गई। पिछले लगभग 30 वर्षों से, रिग्स का प्रिज्मीय या सांक्षेत्रिक समाज और उसकी प्रशासनिक प्रणाली जिसे "साला" कहा जाता है, का आदर्श तुलनात्मक लोक प्रशासन में आधुनिक सिद्धांत निर्माण पटल पर छाया हुआ है। आलोचनाओं एवं कुछ अंतर्निहित विधि संबंधी सीमाओं के बावजूद भी सांक्षेत्रिक साला आदर्श ने विकासशील देशों में विद्यार्थियों और लोक प्रशासन के प्रयोग कर्त्ताओं को आकर्षित किया है। रिग्स के अनुसार प्रिज्मीय या सांक्षेत्रिक समाज की विशेषता यह है कि उसमें संरचनात्मक भिन्नता की मात्रा अधिक होती है तथा उसी सीमा तक एकीकरण (सहयोग) नहीं होता है। एकीकरण का यह अभाव सांक्षेत्रिक या प्रिज्मीय समाज के क्रियाकलापों के लगभग सभी पहलुओं में परिलक्षित होता है।विषमता, औपचारिकतावाद और अतिव्याप्ति प्रिज्मीय या सांक्षेत्रिक समाज तथा उसके "साला" की विशेषताएं है और अतिव्याप्ति के 5 आयाम हैं, बहु-समुदाय, बहु-आदर्शवाद, बाज़ार-कैंटीन प्रतिमान शक्ति बनाम नियंत्रण तथा भाई-भतीजावाद। ये विशेषताएँ प्रिज्मीय समाज की राजनीति, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक प्रणालियों से सम्बद्ध हैं। लोक प्रशासन की सभी महत्वपूर्ण पुस्तकों में इन विशेषताओं की विस्तार से चर्चा की गई है।

5.8.6 विकासवादी उपागम (Development Approach)

तुलनात्मक लोक प्रशासन में एक काफी प्रसिद्ध अवधारणा विकास प्रशासन है, जिसकी विस्तृत चर्चा एक अलग इकाई में की गई है। यह उपागम एक गतिशील प्रशासनिक प्रणाली की कुछ विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करता है जैसे ध्येय-उन्मुखता, परिवर्तन-उन्मुखता, प्रगतिशीलता, नवीनीकरण, भागीदारी और अनुक्रियात्मकता (responsiveness)।

उपर्युक्त उपागमों के अतिरिक्त तुलनात्मक प्रशासनिक विश्लेषण के और भी अनेक उपागम हैं जिनके बारे में जानकारी कम है। इनमें डोरसी का सूचनाकार्यशक्ति प्रतिमान शामिल हैं। फिर भी, अन्य प्रतिमान वेबर के नौकरशाही प्रतिमान तथा रिग्स के सांक्षेत्रिक या प्रिज्मीय प्रतिमान और विकास प्रशासन की संकल्पना की व्यापकता एवं मान्यता का मुकाबला नहीं कर पाये हैं।

ऐसा लगता है कि तुलनात्मक लोक प्रशासन में प्रयोगात्मक चरण अब और अधिक प्रभावशाली नहीं रहा है। लेकिन फिर भी लोक प्रशासन के विद्वानों में विविध प्रकार के प्रशासनिक स्वरूपों या अभिरचनाओं को समझने का उत्साह जीवित है। इसलिए आने वाले समय में तुलनात्मक लोक प्रशासन के नये-नये आयामों के विकसित होने की आशा है।

☛ बोध प्रश्न - 4

टिप्पणी i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1 नौकरशाही उपागम का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.9 सारांश

तुलनात्मक उपागम समाज-विज्ञान के क्षेत्र में खोज का एक अभिन्न अंग है विधिवत समाज-विज्ञान अनुसंधान की कोई भी क्रिया तुलनात्मक अध्ययन के अभाव में पूर्ण नही हो सकती। इस इकाई में, हमने तुलनात्मक लोक प्रशासन के अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र एवं महत्व का परिक्षण किया है। हमने तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन के प्रति भिन्न-भिन्न उपागमों का भी परीक्षण किया है।

5.10 शब्दावली

बाज़ार-कैंटीन : सांक्षेत्रिक या प्रिज्मीय समाज में आर्थिक स्थिति या दृश्य

विवर्तनीय (Diffracted) : एक ऐसी सामाजिक प्रणाली जिसमें सभी संस्थाएं बहुत सुनिश्चित या विशिष्ट होती हैं।

औपचारिक (Formal) : क्या किया जाना चाहिए, के सम्बन्ध में संविधानों, कानूनों, नियमों और विनियमों द्वारा अभिव्यक्त सरकारी मानदंड/सिद्धांत

कार्यात्मक रूप से विवर्तनीय : एक संरचना जो बहुत से कार्यों को सम्पन्न करती है।

फ्यूज्ड (Fused) : एक सामाजिक प्रणाली जिसमें सभी संरचनाएँ काफी अधिक मात्रा में अलग-अलग होती है।

विषमता (Heterogeneity) : प्रणालियों, क्रियाओं या व्यवहारों तथा दृष्टिकोणों के बिल्कुल भिन्न-भिन्न रूपों का एक साथ प्रचलन।

अतिव्याप्ति : जिस सीमा तक प्रशासनिक व्यवहार का निर्धारण वास्तव में गैर-प्रशासनिक मानकों या आधारों जैसे राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक या अन्य कारकों द्वारा किया जाता है।

बहु-समुदायिक : अनेक समुदायों से बना समाज

बहुल-कार्यात्मक : वह संरचना बहुल कार्यात्मक कहलाती है जो किसी संघ की अपेक्षा अधिक अनेक कार्यों को सम्पन्न करती है परन्तु एक परम्परावादी परिवार की तुलना में अधिक विशिष्ट होती है।

बहु-आदर्शात्मक : सांक्षेत्रिक या प्रिज्मीय समाज की या पौराणिक प्रणाली की विशेषता

प्रिज्मीय या सांक्षेत्रिकता (Prismatic) : मिश्रित एवं विवर्तनीय प्रतिमानों के बीच की स्थिति।

सला (Sala) : प्रिज्मीय या सांक्षेत्रिक ब्यूरो।

संरचना : व्यवहार का वह स्वरूप जो किसी सामाजिक प्रणाली की मानक विशेषता बन गया हो।

उपागम (Approach) : इसे अभिगम या दृष्टिकोण भी कहा जाता है।

5.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अरोड़ा, रमेश के. 1985. **कम्पेरेटिव पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन**; एसोशियेटिव पब्लिशिंग हाउस : नई दिल्ली।

रफायली, निमरॉड. **रीडिंग्स इन कम्पेरेटिव पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन**; एलिन एण्ड बकोनी : बॉस्टन।.

रिग्स, फ्रेड, 1964. **एडमिनिस्ट्रेशन इन डेवलपिंग कंट्रीज : द थ्योरी ऑफ प्रिज्मेटिक सोसाइटी**; हफटन मिफलित : बॉस्टर्न।

वर्मा, एस. पी. एण्ड शर्मा एन. के. 1983. **कम्पेरेटिव एडमिनिस्ट्रेशन**; आई.आई.पी.ए. : नई दिल्ली।

5.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न - 1

1 भाग 5.2 देखिए

2 उपभाग 5.5.4 देखिए

3 उपभाग 5.4.5 देखिए

बोध प्रश्न - 2

1 उपभाग 5.5.1 देखिए

2 उपभाग 5.5.3 देखिए

बोध प्रश्न - 3

1 भाग 5.6 देखिए

2 भाग 5.7 देखिए

बोध प्रश्न - 4

1 उपभाग 5.8.1 देखिए।